

संज्वर पुं. (तत्.) 1. शरीर का उच्च तापक्रम, बहुत तेज बुखार 2. उग्र क्रोध।

संझवाती स्त्री. (देश.) साँझ के समय जलाया जाने वाला दीपक, संध्या का दीप।

संझा स्त्री. (तद्.) 1. साँझ का समय, साँध्यकाल 2. साँझ का धुंधलका।

संझिया पुं. (देश.) साँध्यकाल का नाश्ता या भोजन, (प्रायः मिष्ठान्न युक्त)।

संड पुं. (देश.) 1. नसल बढ़ाने में प्रयुक्त हृष्ट-पुष्ट बैल, खेती-बाड़ी या भार ढोने में प्रयुक्त नहीं, साँड 2. वि. कोई काम न करने वाला, हट्टा कट्टा व्यक्ति।

संडा वि. (देश.) बलशाली देह वाला व्यक्ति, हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, तीक्ष्ण बुद्धि वाला नहीं।

संडास पुं. (फा.) घर से दूर, खुले में बनाया गया और चारों ओर से ढका हुआ मल त्याग का एक गड्ढा, एक प्रकार का शौचालय, पाखाना।

संत पुं. (तत्.) लोकहित में संलग्न ईश्वर भक्त, साधु, महात्मा, सत पुरुष।

संतग्रही स्त्री. (तत्.) ज्योतिष में एक ही राशि में सातग्रहों की एकत्र स्थिति।

संतति स्त्री. (तत्.) जनक और जननी की संतान और संतानों के भी संतान और वंशज माता-पिता के बच्चे और उनके भी बाल-बच्चे और वंशज, वंश की अविरल संतान।

संतति होम पुं. (तत्.) संतान की कामना के लिए किया जाने वाला यज्ञ, पुत्रेष्टि यज्ञ।

संतपन पुं. (तत्.) 1. तप्त करने का कार्य, गर्म करने का कार्य 2. कष्ट पहुँचाने का कार्य।

संतप्त वि. (तत्.) 1. आवश्यकता से अधिक तपा हुआ, बहुत ज्यादा गर्म, अत्यन्त ऊष्मा 2. अत्यंत कष्टवाली मानसिक अवस्था, मानसिक संताप की दशा।

संतरण पुं. (तत्.) 1. तैर कर पार करने की क्रिया, कुशलता से तैरने की क्रिया 2. पार लगाने वाला, उद्धारक।

संतरा पुं. (देश.) पेड़ पर लगने वाला नींबू जाति का पीले रंग और मोटे छिलके वाला तथा सेब के आकार का रसीला फल।

संतरी पुं. (पुर्त.) उपयुक्त वर्दी पहने पहरेदारी के लिए नियत किया गया व्यक्ति, पहरेदार चौकीदार, सिपाही।

संतर्जन पुं. (तत्.) 1. डाँटने की भाषा, डराने का कार्य 2. ललकारने का कार्य।

संतर्पक वि. (तत्.) विधिवत् तर्पण करने वाला, पित्तरो को तर्पण हेतु जल चढ़ाने वाला।

संतर्पण पुं. (तत्.) 1. तृप्त करने का कार्य, संतुष्ट करने का कार्य, प्रसन्न करने का कार्य 2. जल का तर्पण देकर पित्तरो को संतुष्ट करने का कार्य 3. एक प्रकार का मिष्ठान।

संतान स्त्री. (तत्.) माता-पिता के बाल-बच्चे, औलाद, बेटे-बेटियाँ, प्रथम संतति।

संतान गणपति पुं. (तत्.) पौराणिक मान्यताओं के अनुसार संतान प्रदान करने वाली गणपति की मूर्ति।

संतान संधि स्त्री. (तत्.) राजनैतिक समझौतों में पुत्र अथवा पुत्री को लेकर की गई संधि, संघर्ष की स्थिति में विरोधी पक्षों द्वारा पुत्र तथा पुत्री के पारस्परिक विवाह को लेकर की गई संधि।

संतानिक वि. (तत्.) पौराणिक वृक्ष कल्पतरु के पुष्पों से बना हुआ, लंबे समय तक सुशोभित रहने वाले पुष्पों द्वारा बनाया गया (हार अथवा माला)।

संतानिका स्त्री. (तत्.) 1. मकड़े द्वारा बनाया गया जाल 2. उबालने के पश्चात् दूध पर जमने वाली मलाई 3. छेना, फेन 4. चाकू, छुरी, खंजर आदि।

संतानिनी स्त्री. (तत्.) उबालने के बाद दूध पर अथवा दही पर जमने वाली मलाई, साढ़ी।

संताप पुं. (तत्.) 1. सूर्य अथवा अग्नि से उत्पन्न प्रचंड ताप, भीषण गर्मी 2. मन का उत्पीड़न 3. ज्वर, बुखार 4. देह गर्म रहने का रोग।